AGRASEN CIVIL SERVICES ACADEMY

Where tradition meets innovation

ACSA

8 से 14 अगस्त 2023

साप्ताहिक करेंट अफेयर्स

For

UPSC / RPSC EXAMS

and All Other Competitive

- पंजीकृत डॉक्टरों के व्यावसायिक आचरण के लिए एनएमसी के दिशानिर्देश
- डिजिटल इंडिया आरआईएससी-वी' संगोष्ठी
- अमहारा क्षेत्र में आपातकाल की घोषणा की
- ज़ुर्ज़ुवे के लिए FDA की स्वीकृति
- IWC की पहली विलुप्ति चेतावनी
- डाक जीवन बीमा का प्रत्यक्ष प्रोत्साहन संवितरण कार्यक्रम
- सीबीआई अकादमी इंटरपोल ग्लोबल अकादमी नेटवर्क से जुड़ गई

A UNIT OF
AGRAWAL PG COLLEGE
Affiliated to University of Rajasthan | Managed by Shri Agrawal Shiksha Samiti
(A Co-Educational College)

+91-8824395504, +91-8290664069
www.acsajaipur.com
Agrasen Katla, Maharaja Agrasen Marg,
Agra Road, Jaipur - 302003

करेंट अफेयर्स 8 से 14 अगस्त 2023

संक्षिप्त:-

- पंजीकृत डॉक्टरों के व्यावसायिक आचरण के लिए एनएमसी के दिशानिर्देश
- डिजिटल इंडिया आरआईएससी-वी' संगोष्ठी
- अमहारा क्षेत्र में आपातकाल की घोषणा की
- अतिथि पोर्टल
- ज़ुर्ज़ुवे के लिए FDA की स्वीकृति
- IWC की पहली विलुप्ति चेतावनी
- लूना-25 अंतरिक्ष यान
- डाक जीवन बीमा का प्रत्यक्ष प्रोत्साहन संवितरण कार्यक्रम
- गुरु गोरखनाथ बोर्ड
- सीबीआई अकादमी इंटरपोल ग्लोबल अकादमी नेटवर्क से जुड़ गई
- अमेज़ॅन सहयोग संधि संगठन
- श्रीलंका विशिष्ट डिजिटल पहचान परियोजना (एसएल-यूडीआई)
- राजौरी चिकरी वुडक्राफ्ट और मुश्कबुदजी चावल को जीआई टैग प्राप्त हुआ

पंजीकृत डॉक्टरों के व्यावसायिक आचरण के लिए एनएमसी के दिशानिर्देश:

राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (एनएमसी) ने हाल ही में आधुनिक चिकित्सा में पंजीकृत डॉक्टरों के पेशेवर आचरण के लिए व्यापक दिशानिर्देश जारी किए हैं। ये दिशानिर्देश चिकित्सा पद्धति के विभिन्न पहलुओं को कवर करते हैं, जिनमें सोशल मीडिया का उपयोग, नुस्खे प्रथाएं, उपचार से इनकार, निरंतर व्यावसायिक विकास (सीपीडी), और सम्मेलनों में भागीदारी शामिल है। डॉक्टरों को शिक्षित करने और सूचित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने की अनुमति है, लेकिन उन्हें रोगी की विशिष्टताओं पर चर्चा करने और रोगी की गोपनीयता का उल्लंघन करने से बचना चाहिए। उन्हें सोशल मीडिया के माध्यम से प्रशंसापत्र साझा करने या मरीजों से आग्रह करने से भी प्रतिबंधित किया गया है। दिशानिर्देश विशिष्ट

मामलों को छोड़कर, जेनेरिक दवाओं को निर्धारित करने पर जोर देते हैं, और अनुमोदित होने तक निश्चित खुराक संयोजनों के उपयोग को हतोत्साहित करते हैं। आपातकालीन स्थिति को छोड़कर, डॉक्टरों को दुर्व्यवहार करने वाले या भुगतान न करने वाले मरीजों का इलाज करने से इनकार करने का अधिकार दिया गया है। निरंतर व्यावसायिक विकास अनिवार्य है, और डॉक्टरों को हर पांच साल में अपने क्षेत्र में 30 क्रेडिट अंक हासिल करने होंगे। सम्मेलनों को फार्मास्युटिकल कंपनियों द्वारा प्रायोजित नहीं किया जा सकता है, और डॉक्टरों को ऐसी संस्थाओं से उपहार या समर्थन प्राप्त करने से बचना चाहिए।

डॉक्टरों को जानकारी और घोषणाएँ ऑनलाइन साझा करने की अनुमति है, लेकिन यह सटीक होनी चाहिए और भ्रामक नहीं होनी चाहिए। रोगी-विशिष्ट जानकारी या स्कैन पोस्ट नहीं किया जाना चाहिए, और सोशल मीडिया के माध्यम से रोगियों से आग्रह करना अनैतिक माना जाता है। शिक्षाप्रद सामग्री डॉक्टर की विशेषज्ञता से संबंधित होनी चाहिए, और सहकर्मियों से ऑनलाइन चर्चा करते समय डॉक्टरों को व्यावसायिकता बनाए रखनी चाहिए।

दिशानिर्देश जेनेरिक दवाओं के उपयोग को कैसे संबोधित करते हैं?

डॉक्टरों को जेनेरिक दवाएं लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, सिवाय उन मामलों को छोड़कर जहां संकीर्ण चिकित्सीय सूचकांक वाली दवाओं की आवश्यकता होती है। दिशानिर्देशों का उद्देश्य ब्रांडेड दवाओं के लिए जेनेरिक दवाओं की समकक्षता को बढ़ावा देना और फार्मेसियों से उन्हें स्टॉक करने का आग्रह करना है। हालाँकि, जेनेरिक दवाओं की उपलब्धता और गुणवत्ता में भिन्नता को लेकर चिंताएँ मौजूद हैं।

किन परिस्थितियों में कोई डॉक्टर इलाज से इंकार कर सकता है?

यदि मरीज़ या उनके परिवार के सदस्य अपमानजनक या हिंसक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं तो डॉक्टर इलाज से इनकार कर सकते हैं । इसके अतिरिक्त, यदि कोई मरीज परामर्श शुल्क वहन नहीं कर सकता है, तो डॉक्टर मरीज को अनुमानित लागत की जानकारी देने के बाद इलाज से इनकार कर सकते हैं। हालाँकि, चिकित्सा आपात स्थिति के दौरान उपचार से इनकार लागू नहीं होता है।

सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी) क्या है, और दिशानिर्देशों के अनुसार यह क्यों महत्वपूर्ण है?

सीपीडी डॉक्टरों के लिए सीखने और अपने कौशल को अद्यतन करने का दायित्व है। दिशानिर्देश डॉक्टरों को हर पांच साल में प्रशिक्षण सत्र आयोजित करने और क्रेडिट अंक जमा करने के लिए बाध्य करते हैं। विकसित होती चिकित्सा पद्धतियों, कोविड-19 जैसी उभरती बीमारियों और क्षेत्र में तकनीकी प्रगति के कारण यह महत्वपूर्ण है।

दिशानिर्देश सम्मेलनों में डॉक्टरों की भागीदारी को कैसे नियंत्रित करते हैं?

जबकि डॉक्टरों को सीपीडी से गुजरना आवश्यक है, सम्मेलन और शैक्षिक सत्र दवा कंपनियों द्वारा प्रायोजित नहीं किए जा सकते हैं। इस विनियमन का उद्देश्य ऐसे प्रायोजनों से उत्पन्न होने वाले संभावित हितों के टकराव या पूर्वाग्रह को रोकना है।

दवा कंपनियों से लाभ प्राप्त करने वाले डॉक्टरों पर दिशानिर्देश क्या प्रतिबंध लगाते हैं?

डॉक्टरों और उनके परिवारों को दवा कंपनियों, स्वास्थ्य देखभाल प्रतिष्ठानों और चिकित्सा उपकरण कंपनियों से उपहार, यात्रा सुविधाएं, मौद्रिक अनुदान या समर्थन स्वीकार करने से प्रतिबंधित किया गया है। हालाँकि, ऐसी संस्थाओं के लिए काम करने वाले डॉक्टरों के वेतन को इस प्रतिबंध से छूट दी गई है।

डिजिटल इंडिया आरआईएससी-वी' संगोष्ठी

डिजिटल इंडिया आरआईएससी-वी संगोष्ठी, 6 अगस्त, 2023 को प्रतिष्ठित आईआईटी मद्रास रिसर्च पार्क में आयोजित एक दिवसीय कार्यक्रम, भारतीय इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर था। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा आईआईटी मद्रास और आईआईटीएम प्रवर्तक टेक्नोलॉजीज फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित इस संगोष्ठी का उद्देश्य आरआईएससी-वी मार्ग के माध्यम से भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स के भविष्य को प्रदर्शित करना है।

डिजिटल इंडिया आरआईएससी-वी संगोष्ठी का प्राथमिक लक्ष्य इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में भारत की क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच तैयार करना था। संगोष्ठी ने विशेष रूप से आरआईएससी-वी मार्ग पर ध्यान केंद्रित करते हुए इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में प्रगति और नवाचारों पर चर्चा करने के लिए सम्मानित शिक्षाविदों, उद्योग विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, प्रोफेसरों और छात्रों को एक साथ लाया।

एक आकर्षक हैकथॉन और निवेशक बैठक

तकनीकी वार्ता और इंटरैक्टिव स्टालों के अलावा, संगोष्ठी ने एक आकर्षक हैकथॉन की मेजबानी की जिसने प्रतिभागियों को आरआईएससी-वी तकनीक का उपयोग करके विचार-मंथन करने और नवीन समाधान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अलावा, आरआईएससी-वी पारिस्थितिकी तंत्र में शामिल उद्योग के खिलाड़ियों और स्टार्टअप के बीच निवेश को आकर्षित करने और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष निवेशक बैठक आयोजित की गई थी।

आरआईएससी-वी को समझना

आरआईएससी-वी का मतलब रिड्यूस्ड इंस्ट्रक्शन सेट कंप्यूटर है। पारंपरिक मालिकाना प्रोसेसर आर्किटेक्चर के विपरीत, आरआईएससी-वी एक ओपन-सोर्स आईएसए है जो डिजाइनरों को विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए प्रोसेसर को अनुकूलित करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। इसे शुरू में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले में विकसित किया गया था, और आरआईएससी-वी में 'वी' पांचवीं पीढ़ी के लिए है, जो इस अत्याधुनिक तकनीक के निरंतर विकास और सुधार को दर्शाता है।

डीआईआर-वी कार्यक्रम: भारत का महत्वाकांक्षी उद्देश्य

भारत द्वारा शुरू किए गए DIR-V कार्यक्रम का एक स्पष्ट उद्देश्य है: देश के सेमीकंडक्टर पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना। आरआईएससी-वी आर्किटेक्चर पर आधारित उन्नत माइक्रोप्रोसेसर बनाकर, भारत का लक्ष्य विदेशी प्रौद्योगिकी प्रदाताओं पर अपनी निर्भरता को कम करते हुए सेमीकंडक्टर डिजाइन में आत्मनिर्भर बनना है। इस पहल के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता भारत को वैश्विक सेमीकंडक्टर परिदृश्य में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने के उसके दृढ़ संकल्प को दर्शाती है।

आरआईएससी-वी इंटरनेशनल: अग्रणी सहयोग

आरआईएससी-वी इंटरनेशनल, आरआईएससी-वी के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार संगठन, प्रौद्योगिकी को वैश्विक रूप से अपनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 3,000 से अधिक सदस्यों के साथ, संगठन आरआईएससी-वी समुदाय के भीतर सहयोग, नवाचार और मानकीकरण को बढ़ावा देता है। इस समावेशी दृष्टिकोण ने विभिन्न उद्योगों में आरआईएससी-वी विकास और अनुप्रयोग के लिए एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया है।

आरआईएससी-वी प्रोसेसर के विविध अनुप्रयोग

पहनने योग्य वस्तुओं , औद्योगिक उपकरणों, आईओटी सेंसर और घरेलू उपकरणों सहित कई क्षेत्रों में किया जाता है । उनकी अनुकूलनशीलता और अनुकूलनशीलता उन्हें स्थान-बाधित और बैटरी चालित डिज़ाइन के लिए आदर्श बनाती है। इसके अतिरिक्त, आरआईएससी-वी कोर को स्मार्टफोन, ऑटोमोटिव, उच्च-प्रदर्शन कंप्यूटिंग (एचपीसी), और डेटा सेंटर जैसे विशिष्ट उद्योगों के लिए तैयार किया जा सकता है, जो इस क्रांतिकारी तकनीक की बहुमुखी प्रतिभा और क्षमता को प्रदर्शित करता है।

आरआईएससी-वी आईएसए के माध्यम से नवाचार को सशक्त बनाना

आरआईएससी-वी आर्किटेक्चर का सबसे महत्वपूर्ण लाभ सॉफ्टवेयर विकास पर इसका प्रभाव है। आईएसए के सरलीकृत प्रोसेसर निर्देश विकास प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करते हैं, जिससे त्वरित कस्टम प्रोसेसर विकास संभव हो पाता है। इसके अलावा, आरआईएससी-वी की खुली-मानक प्रकृति उद्योग सहयोग को प्रोत्साहित करती है और नवाचार को बढ़ावा देती है, क्योंकि डिजाइनर अद्वितीय सुविधाओं और समाधान बनाने के लिए मिलकर काम कर सकते हैं।

आरआईएससी-वी टैलेंट हब के रूप में भारत का उत्थान

खुद को विश्व के लिए आरआईएससी-वी प्रतिभा केंद्र के रूप में स्थापित करके, भारत का लक्ष्य वैश्विक आरआईएससी-वी समुदाय में अपनी प्रगति प्रदर्शित करना है। यह महत्वाकांक्षी लक्ष्य देश के शिक्षा जगत, वैज्ञानिक समाजों और स्टार्टअप्स में चिप डिजाइनरों के संपन्न पारिस्थितिकी तंत्र को उजागर करता है , जो बढ़ते आरआईएससी-वी बाजार में एक प्रमुख स्थान हासिल करने का प्रयास कर रहे हैं। स्थानीय प्रतिभा को पोषित करने और तकनीकी अवसर प्रदान करने की सरकार की प्रतिबद्धता भारत को दुनिया भर में आरआईएससी-वी SoCs के एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में स्थापित करती है।

अमहारा क्षेत्र में आपातकाल की घोषणा की :

अमहारा क्षेत्र में बढ़ती हिंसा के परिणामस्वरूप अराजकता की स्थिति पैदा हो गई है, जिसने फानो नामक एक स्थानीय जातीय मिलिशिया को राष्ट्रीय सेना के खिलाफ खड़ा कर दिया है। स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि सार्वजनिक सुरक्षा के लिए बढ़ते खतरे और सशस्त्र चरमपंथी समूहों द्वारा की गई महत्वपूर्ण आर्थिक क्षति से निपटने के लिए मंत्रिपरिषद ने आपातकाल की स्थिति घोषित कर दी है।

आपातकाल की घोषणा के कारण: हिंसा

अमहारा क्षेत्र में आपातकाल की घोषणा का प्राथमिक कारण स्थानीय जातीय मिलिशिया, फ़ानो और राष्ट्रीय सेना के बीच हिंसा में वृद्धि है। क्षेत्रीय सुरक्षा बलों को राष्ट्रीय सेना में एकीकृत करने की एक विवादित योजना पर झड़पें तेज हो गई हैं। पिछले साल, सरकार ने अमहारा मिलिशिया को दबाने का भी प्रयास किया, जिससे क्षेत्र में तनाव और बढ़ गया। हिंसा के परिणामस्वरूप अज्ञात संख्या में लोग हताहत हुए हैं, जिससे गंभीर आर्थिक, सामाजिक और मानवीय क्षति हुई है, जिससे तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता उत्पन्न हुई है।

जातीय मिलिशिया: फ़ानो

अमहारा क्षेत्र में हिंसा के केंद्र में स्थानीय जातीय मिलिशिया है जिसे फानो के नाम से जाना जाता है । इस समूह ने क्षेत्रीय सुरक्षा बलों के साथ मिलकर पड़ोसी देश के साथ दो साल तक चले गृह युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई टाइग्रे क्षेत्र. अमहारा आबादी फ़ानो और क्षेत्रीय सुरक्षा बलों को अपने हितों का रक्षक मानते हुए उनका समर्थन करती है। हालाँकि, इथियोपियाई सरकार इन समूहों को संवैधानिक व्यवस्था के लिए ख़तरे के रूप में देखती है और उनके प्रभाव को दबाने का लक्ष्य रखती है।

अमहारा क्षेत्र पर प्रभाव

जैसे-जैसे हिंसा बढ़ती जा रही है, अमहारा क्षेत्र बुरी तरह प्रभावित हुआ है। गोंदर और लालिबेला जैसे पर्यटन स्थलों के लिए उड़ानें रद्द कर दी गई हैं , जिससे क्षेत्र का पर्यटन उद्योग बाधित हो गया है। सरकारी अधिकारी कई कस्बों से भाग गए हैं, जिससे बिजली शून्य हो गई है और इंटरनेट काट दिया गया है, जिससे संचार और सूचना तक पहुंच प्रतिबंधित हो गई है। इसके अलावा, नागरिक क्षेत्रों में गोला-बारूद और तोपखाने के उपयोग ने मानवीय संकट को बढ़ा दिया है।

अमहारा का भौगोलिक महत्व

अमहारा क्षेत्र इथियोपिया के लिए अत्यधिक भौगोलिक महत्व रखता है । यह ताना झील का घर है , जो इथियोपिया में पानी का सबसे बड़ा अंतर्देशीय निकाय और ब्लू नील नदी का स्रोत है। इस क्षेत्र के ऊंचे इलाकों में इथियोपिया की कुल वार्षिक वर्षा का 80% प्राप्त होता है, जिससे यह देश का सबसे उपजाऊ और जलवायु की दृष्टि से मेहमाननवाज़ क्षेत्र बन जाता है।

यूके में फैल रहे नए COVID वैरिएंट की पहचान EG.5.1 या Eris वैरिएंट के रूप में की गई है। इसकी खोज ने इसकी विशेषताओं और निहितार्थों को समझने के लिए स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा निगरानी और विश्लेषण बढ़ा दिया है।

सात मामलों में से एक: एरिस वेरिएंट का प्रवेश

एरिस वैरिएंट ने यूके में तेजी से अपनी पकड़ बनाई है, अब सात में से एक सीओवीआईडी -19 मामले इस स्ट्रेन के कारण है। यह चिंताजनक आंकड़ा प्रसार को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए नए वेरिएंट की पहचान करने और उन पर नज़र रखने के महत्व को रेखांकित करता है।

सीमाओं से परे: ईजी.5.1 की वैश्विक पहुंच

एरिस वैरिएंट केवल यूके तक ही सीमित नहीं है। इसकी उपस्थिति यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका सहित विभिन्न महाद्वीपों के कई देशों में महसूस की गई है। वैश्विक प्रसार वायरस के उत्परिवर्तन से निपटने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के महत्व पर जोर देता है।

11.8% उपस्थिति: यूके अनुक्रमों में ईजी.5.1 को वर्गीकृत करना

जुलाई के दूसरे सप्ताह में, यूके के अनुक्रमित COVID-19 मामलों में से लगभग 11.8% की पहचान EG.5.1 के रूप में की गई थी। यह प्रतिशत वैरिएंट की बढ़ती व्यापकता और निरंतर सतर्कता की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

योगदान देने वाले कारक: मामलों में स्पाइक को उजागर करना

स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने एरिस वैरिएंट के मामलों में हालिया वृद्धि में योगदान देने वाले दो कारकों की पहचान की है। खराब मौसम की स्थिति और घटती प्रतिरक्षा ने वैरिएंट के संचरण को सुविधाजनक बनाने और संक्रमण में वृद्धि का कारण बनने में भूमिका निभाई है।

सुरक्षात्मक उपाय: एरिस वेरिएंट के खिलाफ बचाव

व्यक्ति एरिस वैरिएंट से खुद को बचाने के लिए सक्रिय कदम उठा सकते हैं। संक्रमण और संचरण के जोखिम को कम करने के लिए उचित स्वच्छता, बार-बार हाथ धोना और सामाजिक दूरी बनाए रखना प्रभावी उपाय हैं।

लक्षण पहेली: एरिस वैरिएंट को समझना

जबकि एरिस वेरिएंट के लिए विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख नहीं किया गया है, यह सीओवीआईडी -19 के समान सामान्य फ्लू जैसे लक्षण प्रदर्शित करता है। इन लक्षणों में बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ , थकान, शरीर में दर्द और स्वाद या गंध की हानि शामिल हैं।

अतिथि पोर्टल

केरल सरकार पंजीकरण प्रक्रिया में तेजी लाने और राज्य में प्रवासी श्रमिकों के लिए एक विशिष्ट पहचान प्रणाली शुरू करने के लिए सक्रिय कदम उठा रही है। हाल ही में प्रवासी श्रमिकों द्वारा बच्चों के खिलाफ कथित तौर पर किए गए यौन अपराधों

के जवाब में, सरकार ने ' अतिथि पोर्टल' शुरू किया है। इस उपयोगकर्ता-अनुकूल वेब पोर्टल का उद्देश्य "अतिथि श्रमिकों" के पंजीकरण को सुव्यवस्थित करना और उनकी सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

केरल सरकार की एक अनूठी पहल, अथिधि पोर्टल सोमवार को लॉन्च होने वाली है । इसका प्राथमिक उद्देश्य प्रवासी श्रमिकों के पंजीकरण में तेजी लाना है, खासकर नाबालिगों के खिलाफ दो भयावह यौन अपराधों के बाद। ऐसी ही एक घटना में बिहार के एक प्रवासी श्रमिक द्वारा कथित तौर पर एर्नाकुलम जिले के अलुवा की पांच वर्षीय लड़की का अपहरण, बलात्कार और हत्या शामिल थी। राज्य कमजोर व्यक्तियों की सुरक्षा और उनके अधिकारों को बनाए रखने के लिए अपने उपायों को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

सहायता डेस्क के माध्यम से अतिथि कार्यकर्ताओं की सहायता करना

यह सुनिश्चित करने के प्रयास में कि कोई भी अतिथि कार्यकर्ता पोर्टल से छूट न जाए, केरल सरकार रेलवे स्टेशनों पर हेल्प डेस्क स्थापित करने की योजना बना रही है, जहां अतिथि कार्यकर्ता अक्सर बड़ी संख्या में पहुंचते हैं। ये हेल्प डेस्क श्रमिकों को बहुमूल्य सहायता प्रदान करेंगे, पंजीकरण प्रक्रिया के माध्यम से उनका मार्गदर्शन करेंगे और सिस्टम में उनका समावेश सुनिश्चित करेंगे।

राज्यव्यापी लॉन्च और श्रमिक पंजीकरण

अथिधि पोर्टल 7 अगस्त को राज्यव्यापी लॉन्च के लिए निर्धारित है , और इससे राज्य भर में अतिथि श्रमिकों के पंजीकरण को सुव्यवस्थित करने की उम्मीद है । ठेकेदार और नियोक्ता पोर्टल में श्रमिकों को पंजीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी आवश्यक जानकारी सही दर्ज की गई है। फिर नामांकन अधिकारी प्रदान किए गए विवरण की सावधानीपूर्वक जांच करेगा और प्रत्येक कार्यकर्ता को एक अद्वितीय आईडी जारी करेगा। यह पहचान प्रणाली श्रमिकों पर नज़र रखने और उनके रिकॉर्ड के कुशल प्रबंधन की सुविधा प्रदान करेगी।

प्रवासी श्रमिकों के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करना

अथिधि पोर्टल केवल पंजीकरण प्रक्रिया में तेजी लाने से कहीं आगे जाता है । इसे प्रवासी श्रमिकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किया गया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनकी सामाजिक सुरक्षा उपायों तक पहुंच हो। एक विशिष्ट पहचान प्रणाली बनाकर, पोर्टल श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करने में मदद करेगा और उन्हें अपरिचित वातावरण में सुरक्षा की भावना प्रदान करेगा।

ज़ुर्ज़ुवे के लिए FDA की स्वीकृति

अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) ने हाल ही में प्रसवोत्तर अवसाद (पीपीडी) और प्रमुख अवसादग्रस्तता विकार (एमडीडी) को संबोधित करने के लिए बायोजेन और सेज थेरेप्यूटिक्स द्वारा सह-विकसित ज़ुर्ज़ुवे नामक एक अभूतपूर्व

मौखिक गोली को मंजूरी दे दी है। यह क्रांतिकारी दवा इन दुर्बल स्थितियों से प्रभावित लाखों महिलाओं के लिए आशा और राहत प्रदान करती है।

ज़ुर्ज़ुवे मनोरोग चिकित्सा में एक प्रमुख मील का पत्थर है क्योंकि यह पहली मौखिक गोली है जिसे विशेष रूप से बच्चे के जन्म के बाद गंभीर अवसाद के इलाज के लिए डिज़ाइन किया गया है। पीपीडी को संबोधित करने के अलावा, ज़ुर्ज़ुवे एमडीडी या नैदानिक अवसाद पर भी ध्यान केंद्रित करता है, जो इन मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों से निपटने वाले व्यक्तियों की सहायता के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है।

प्रसवोत्तर अवसाद का प्रभाव

पीपीडी का अनुभव करने वाली महिलाओं के जीवन पर दूरगामी परिणाम होते हैं। यह विकार गर्भावस्था के बाद सामान्य कामकाज पर लौटने की उनकी क्षमता को गंभीर रूप से बाधित करता है। यह भावनात्मक उथल-पुथल, चिंता और उदासी पैदा कर सकता है, जो संभावित रूप से अपने नवजात बच्चे के साथ मां के रिश्ते को प्रभावित कर सकता है। इस समस्या की गंभीरता को स्वीकार करते हुए, FDA द्वारा ज़ुर्ज़ुवे को अधिकृत करना प्रसवोत्तर अवसाद से जूझ रही माताओं की परेशानी को कम करने के लिए आशा की एक किरण लाता है।

ज़ुर्ज़ुवे की प्रत्याशित उपलब्धता

एफडीए की मंजूरी के बाद, ज़ुर्ज़ुवे के 2023 की चौथी तिमाही में व्यावसायिक रूप से उपलब्ध होने की उम्मीद है। हालांकि, यह यूएस ड्रग एन्फोर्समेंट एडमिनिस्ट्रेशन द्वारा नियंत्रित पदार्थ के रूप में शेड्यूलिंग के अधीन है, जिसके 90 दिनों के भीतर होने की भविष्यवाणी की गई है। एक बार उपलब्ध होने पर, ज़ुर्ज़ुवे मानसिक स्वास्थ्य उपचार के क्षेत्र में गेम-चेंजर बनने के लिए तैयार है।

एफडीए के संपूर्ण प्रतिक्रिया पत्र से अंतर्दृष्टि

मूल्यांकन प्रक्रिया के दौरान, एफडीए ने एमडीडी वाले वयस्कों के उपचार के संबंध में ज़ुर्ज़ुवे के लिए नई दवा के आवेदन के लिए एक पूर्ण प्रतिक्रिया पत्र जारी किया। एजेंसी ने संकेत दिया कि आवेदन एमडीडी उपचार के लिए दवा की प्रभावशीलता के पर्याप्त सबूत प्रदान नहीं करता है। इस क्षेत्र में इसकी मंजूरी का समर्थन करने के लिए आगे के अध्ययन की आवश्यकता है।

अवसादग्रस्तता विकारों की व्यापकता

अमेरिका में एमडीडी सहित अवसादग्रस्तता विकारों का प्रचलन काफी है। 2021 में, देश में अनुमानित 21 मिलियन वयस्कों ने प्रमुख अवसादग्रस्तता विकार के कम से कम एक प्रकरण का अनुभव किया। इसके अतिरिक्त, पीपीडी जन्म देने वाली सात महिलाओं में से लगभग एक को प्रभावित करता है। मौखिक दवा के रूप में ज़ुर्ज़ुवे की उपलब्धता इन मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों को अधिक प्रभावी ढंग से संबोधित करने की नई आशा लाती है।

पीपीडी के लिए पिछले उपचार के विकल्प और सामान्य उपचार

ज़ुर्ज़ुवे की मंजूरी से पहले , प्रसवोत्तर अवसाद का उपचार मुख्य रूप से अंतःशिरा इंजेक्शन के रूप में उपलब्ध था। हालाँकि, ज़ुर्ज़ुवे की शुरुआत के साथ , महिलाओं के पास अब मौखिक गोली का विकल्प होगा, जिससे उपचार की सुविधा और पहुंच बढ़ जाएगी। ज़ुर्ज़ुवे के साथ-साथ , परामर्श और अवसादरोधी दवाओं का उपयोग आमतौर पर प्रसवोत्तर अवसाद के लक्षणों को प्रबंधित करने और कम करने के लिए किया जाता है।

IWC की पहली विलुप्ति चेतावनी:

वाक्विटा पोरपोइज़ पर केंद्रित है, जो कि कैलिफोर्निया की खाड़ी या मैक्सिको में कॉर्टेज़ सागर में स्थित केवल 10 शेष व्यक्तियों वाली एक प्रजाति है। वाक्विटा विशेष रूप से कैलिफोर्निया की खाड़ी, मैक्सिको के उत्तरी भाग में मौजूद है, इसकी आबादी 1997 में लगभग 570 से घटकर 2018 में लगभग 10 जानवर रह गई है ।

विशेष निवास स्थान: मेक्सिको की कैलिफोर्निया की खाड़ी

वाक्विटा पोर्पोइज़ एक स्थानिक प्रजाति है, जो विशेष रूप से कैलिफोर्निया की खाड़ी, मैक्सिको के उत्तरी भाग में पाई जाती है । यह प्रतिबंधित आवास संरक्षण प्रयासों की तात्कालिकता को बढ़ाता है, क्योंकि प्रजातियों का अस्तित्व उसके अद्वितीय पर्यावरण की सुरक्षा और बहाली पर निर्भर करता है।

बायकैच : एक घातक खतरा

वाक्विटा पोरपॉइज़ की तेजी से गिरावट का प्राथमिक कारण बायकैच है - मछली पकड़ने के गियर में इन समुद्री स्तनधारियों का अनजाने में कब्जा। आमतौर पर मछली पकड़ने के लिए उपयोग किए जाने वाले गिलनेट, वाक्विटा आबादी के लिए एक घातक खतरा साबित हुए हैं।

टोटोबा व्यापार जटिलताएँ

गिलनेट्स टोटोबा नामक मछली को निशाना बनाते हैं, जो अपने स्विमब्लैडर के लिए चीनी व्यंजनों में अत्यधिक मूल्यवान मछली है , अनजाने में वाक्विटा पोरपोइज़ को फँसा लेती है। टोटोबा में अवैध अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ने गिलनेट मछली पकड़ने और वाक्विटा आबादी पर इसके विनाशकारी परिणामों को संबोधित करने के प्रयासों को और अधिक जटिल बना दिया है।

प्रवर्तन: आशा की एक किरण

वाक्विटा के मुख्य निवास स्थान के भीतर पूर्ण गिलनेट प्रतिबंध लागू करने से अभी भी इस लचीली प्रजाति के लिए पुनर्प्राप्ति का मौका मिल सकता है। आईडब्ल्यूसी वाक्विटा को और अधिक नुकसान से बचाने के लिए प्रभावी उपायों को लागू करने के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करता है ।

संरक्षण में एक पाठ

IWC की वैज्ञानिक समिति इस पाठ पर जोर देती है कि संरक्षण के प्रयास बहु-विषयक होने चाहिए। विलुप्ति में योगदान देने वाले व्यापक कारकों को संबोधित करने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो तात्कालिक चिंताओं से परे हो।

लूना-25 अंतरिक्ष यान

47 वर्षों के अंतराल के बाद, रूस अपने लूना-25 अंतरिक्ष यान के प्रक्षेपण के साथ चंद्र अन्वेषण में एक उल्लेखनीय छलांग लगाने के लिए तैयार है। यह उद्यम न केवल अंतरिक्ष अन्वेषण में पुनरुत्थान का प्रतीक है बल्कि चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव तक पहुंचने के लिए भारत के साथ रणनीतिक दौड़ का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह खोज चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की एक महत्वपूर्ण संसाधन - पानी प्रदान करने की आकर्षक क्षमता से प्रेरित है । इसे वोस्तोचन से लॉन्च किया जाएगा कॉस्मोड्रोम , जो मॉस्को से 5,550 किलोमीटर दूर स्थित है

दक्षिणी ध्रुव को छूने वाला है , रूस के लूना-25 के साथ एक मनोरम चंद्र दौड़ में प्रतिस्पर्धा कर रहा है। दोनों देशों का लक्ष्य पानी के मूल्यवान स्रोत के रूप में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की क्षमता का पता लगाना है, जिसका अंतरिक्ष में भविष्य की मानव उपस्थिति पर गहरा प्रभाव हो सकता है।

चंद्र संसाधनों को खोलना: दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ

चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुव विशाल बर्फ भंडार का वादा करता है जिसे संभावित रूप से चंद्र सतह पर मानव गतिविधियों का समर्थन करने के लिए संसाधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। बर्फ की मौजूदगी ईंधन, ऑक्सीजन और यहां तक कि पीने का पानी निकालने के दरवाजे खोलती है, जो अंतरिक्ष में भविष्य के मानव प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण है।

लूना-25 की पेचीदगियाँ

रूस का लूना-25, 1.8 टन वजन के साथ, 31 किलोग्राम वजन का वैज्ञानिक पेलोड ले जाता है। यह परिष्कृत अंतरिक्ष यान 15 सेमी तक की गहराई से चट्टान के नमूने एकत्र करने के लिए एक स्कूप तैनात करेगा। इन नमूनों में जमे पानी की मात्रा की जांच की जाएगी, जो चंद्रमा पर मानव निवास की संभावना का आकलन करने के लिए एक महत्वपूर्ण तत्व है।

डाक जीवन बीमा का प्रत्यक्ष प्रोत्साहन संवितरण कार्यक्रम

डाक जीवन बीमा (पीएलआई), 1884 से चली आ रही विरासत के साथ बीमा क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम है, जो ग्राहक-केंद्रितता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। अपनी बिक्री बल के सर्वोपरि महत्व को पहचानते हुए, पीएलआई दिल्ली और उत्तराखंड सर्कल में "प्रत्यक्ष प्रोत्साहन संवितरण" नामक एक अभूतपूर्व पायलट कार्यक्रम शुरू कर रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पीएलआई के एजेंटों को पुरस्कृत और मुआवजा देने के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाना है।

1884 में स्थापित, पीएलआई बीमा उद्योग में एक दृढ़ खिलाड़ी रहा है। इसकी दशकों पुरानी उपस्थिति ने एक विश्वसनीय इकाई के रूप में इसकी स्थिति को मजबूत किया है, जिससे इसके ग्राहकों के लिए विकास और सुरक्षा दोनों को बढ़ावा मिला है। संस्था की दीर्घकालिक विरासत जनता को मूल्यवान सेवाएं प्रदान करने के प्रति इसके समर्पण के प्रमाण के रूप में खड़ी है।

नवोन्मेषी दृष्टिकोण: प्रत्यक्ष प्रोत्साहन संवितरण

नया पायलट कार्यक्रम, "प्रत्यक्ष प्रोत्साहन संवितरण", पीएलआई के दृष्टिकोण में एक रणनीतिक बदलाव का प्रतीक है। यह पहल संगठनात्मक मील के पत्थर हासिल करने में अपनी बिक्री बल द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के लिए पीएलआई की मान्यता को उजागर करती है। सुधार के लिए पीएलआई की चल रही प्रतिबद्धता के अनुरूप , इस कार्यक्रम का उद्देश्य एजेंट प्रोत्साहन कार्यक्रम को बढ़ाना है, जिससे उनके प्रदर्शन को अनुकूलित किया जा सके।

भौगोलिक कार्यान्वयन

पायलट कार्यक्रम दो प्रमुख क्षेत्रों: दिल्ली और उत्तराखंड में शुरू करने की तैयारी है । इन क्षेत्रों को कार्यक्रम की प्रभावकारिता के लिए प्रारंभिक परीक्षण आधार के रूप में चुना गया है। इन क्षेत्रों का चयन नवाचार के प्रति पीएलआई के नपे-तुले दृष्टिकोण को रेखांकित करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन से पहले नई प्रणाली मजबूत हो।

सशक्तीकरण एजेंट: सुव्यवस्थित फंड ट्रांसफर

"प्रत्यक्ष प्रोत्साहन संवितरण" सुविधा के तहत, एजेंटों को कमीशन हस्तांतरण की एक अभिनव प्रणाली का अनुभव होगा। पारंपरिक तरीकों के बजाय, पिछले महीने में अर्जित कमीशन सीधे एजेंटों के डाकघर बचत बैंक खातों में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। यह सुव्यवस्थित प्रक्रिया न केवल सुरक्षा और गति सुनिश्चित करती है बल्कि भौतिक जांच से जुड़ी देरी को भी समाप्त करती है।

प्रभाव और पहुंच

पायलट पहल से देश भर में पीएलआई के बिक्री बल के सदस्यों की एक बड़ी संख्या पर प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। इसमें ग्रामीण जैसे विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारी शामिल हैं डाक सेवक , प्रत्यक्ष एजेंट, फील्ड अधिकारी और विभागीय कर्मचारी। इतने विविध कार्यबल में कार्यक्रम का कार्यान्वयन समावेशिता और दक्षता के प्रति पीएलआई की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

विकास और रिश्तों को बढ़ावा देना

पीएलआई के एजेंटों का समर्पण संगठन की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। एजेंट ग्राहकों को प्राप्त करने और बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, प्रभावी ढंग से ब्रांड एंबेसडर के रूप में कार्य करते हैं। वैयक्तिकृत सेवाएं प्रदान करने और

मजबूत ग्राहक संबंध विकसित करने की उनकी प्रतिबद्धता ग्राहक संतुष्टि के माध्यम से पीएलआई के विकास के मिशन के साथ संरेखित है।

गुरु गोरखनाथ बोर्ड

गोरखनाथ बोर्ड की स्थापना की हालिया पहल राज्य में जोगी , योगी और नाथ समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । इसका प्राथमिक उद्देश्य बुनियादी और आवश्यक सुविधाओं तक उनकी पहुंच सुनिश्चित करते हुए इन पिछड़े वर्गों को परेशान करने वाली समस्याओं और मुद्दों की पहचान करना और उन्हें कम करना है।

गुरु गोरखनाथ बोर्ड का मुख्य उद्देश्य राजस्थान में जोगी , योगी और नाथ समुदायों के सामने आने वाली विशिष्ट समस्याओं और मुद्दों की पहचान करने के लिए एक व्यापक सर्वेक्षण करना है। उनकी अनूठी चुनौतियों को समझकर, बोर्ड का लक्ष्य लक्षित समाधान प्रस्तावित करना है जो इन समुदायों की जीवन स्थितियों और संभावनाओं में सुधार करेगा।

राज्य सरकार को कल्याणकारी उपाय सुझाना

प्राथमिक सर्वेक्षण रिपोर्ट के आधार पर गुरु गोरखनाथ बोर्ड राज्य सरकार को शोधपरक सुझाव भेजेगा। इन सुझावों में पिछड़े वर्गों की जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किए गए विभिन्न कल्याणकारी उपाय शामिल होंगे। बोर्ड का इरादा आवश्यक सुविधाओं और सुविधाओं के प्रावधान पर ध्यान केंद्रित करना है जो हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए जीवन की गुणवत्ता को ऊपर उठा सकते हैं।

प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभागों के साथ समन्वय करना

बोर्ड नई योजनाओं के प्रस्ताव के अलावा विभिन्न सरकारी विभागों के साथ समन्वय स्थापित करने में अहम भूमिका निभाएगा। जोगी , योगी और नाथ समुदायों की बेहतरी को लक्षित करने वाली चल रही योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए यह समन्वय महत्वपूर्ण है । विभिन्न विभागों के बीच सहयोग को बढ़ावा देकर, बोर्ड सेवाओं के वितरण को सुव्यवस्थित करना और उनके प्रभाव को अधिकतम करना चाहता है।

शैक्षिक और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देना

गुरु गोरखनाथ बोर्ड हाशिए पर रहने वाले समुदायों के उत्थान में शिक्षा और आर्थिक स्थिरता के महत्व को पहचानता है। इसलिए, बोर्ड इन क्षेत्रों में प्रगति को बढ़ावा देने पर लगन से काम करेगा। लक्षित पहलों और कार्यक्रमों के माध्यम से, इसका उद्देश्य शैक्षिक अवसरों को बढ़ाना और पिछड़े वर्गों के बीच आर्थिक विकास और आत्मनिर्भरता के रास्ते बनाना है।

बोर्ड की संरचना

गुरु गोरखनाथ बोर्ड में पांच गैर-सरकारी सदस्य होंगे, जिनमें एक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और तीन अन्य सदस्य शामिल होंगे। यह विविध संरचना विभिन्न दृष्टिकोणों और विशेषज्ञता का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करती है, जो समुदाय की चुनौतियों का समाधान करने में एक सर्वांगीण दृष्टिकोण में योगदान करती है।

सीबीआई अकादमी इंटरपोल ग्लोबल अकादमी नेटवर्क से जुड़ गई

हाल के घटनाक्रम में, केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) अकादमी को आधिकारिक तौर पर प्रतिष्ठित इंटरपोल ग्लोबल अकादमी नेटवर्क में शामिल किया गया है।

वैश्विक मंच पर कदम रखते हुए, सीबीआई अकादमी के पास अब इंटरपोल ग्लोबल अकादमी नेटवर्क का 10वां सदस्य होने का प्रतिष्ठित खिताब है। यह प्रेरण न केवल अकादमी की क्षमताओं का प्रमाण है, बल्कि कानून प्रवर्तन प्रशिक्षण और कार्यप्रणाली के वैश्विक मानकों को बनाए रखने के प्रति इसके समर्पण का भी प्रमाण है।

इंटरपोल ग्लोबल एकेडमी नेटवर्क के बारे में

2019 में शुरू किया गया, इंटरपोल ग्लोबल एकेडमी नेटवर्क की स्थापना कानून प्रवर्तन प्रशिक्षण के लिए विश्वव्यापी कार्यप्रणाली को बढ़ावा देने के इंटरपोल के मिशन को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। विभिन्न क्षेत्रों में फैले सदस्यों के साथ, नेटवर्क दुनिया भर में कानून प्रवर्तन प्रशिक्षण संस्थानों के बीच विद्वानों के सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

अकादमी का केंद्र

गाजियाबाद में स्थित, सीबीआई अकादमी भारत के लिए एक स्तंभ के रूप में खड़ी है, जो अपराध जांच, अभियोजन और सतर्कता में देश के सर्वश्रेष्ठ लोगों को प्रशिक्षण देती है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से सटी इसकी भौगोलिक स्थिति इसे रणनीतिक और लॉजिस्टिक दोनों लाभ प्रदान करती है।

इंटरपोल का इनोवेशन हब

वैश्विक मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी, इंटरपोल के ग्लोबल कॉम्प्लेक्स फॉर इनोवेशन का मुख्यालय सिंगापुर में है। यह परिसर अंतरराष्ट्रीय पुलिसिंग में नवीन प्रथाओं का नेतृत्व करने के लिए इंटरपोल की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

एक युवा लेकिन शक्तिशाली नेटवर्क

अस्तित्व में केवल तीन वर्ष होने के बावजूद, इंटरपोल ग्लोबल एकेडमी नेटवर्क कानून प्रवर्तन शिक्षा पर विश्वव्यापी परिप्रेक्ष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित कर रहा है। यह एक ऐसा प्रयास है जो विभिन्न देशों के बीच सहयोग, समझ और साझा कार्यप्रणाली को बढ़ावा देता है।

भारत में सीबीआई की महत्वपूर्ण भूमिका

सीबीआई सिर्फ भारत के घरेलू कानून प्रवर्तन परिदृश्य में ही महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाती है। यह देश में इंटरपोल से संबंधित सभी मामलों के लिए प्राथमिक नोडल इकाई है। अतीत में, इसने अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ाने के लिए एफबीआई जैसी उल्लेखनीय विदेशी एजेंसियों के साथ सफलतापूर्वक सहयोग किया है।

आगे का रास्ता

इस नेटवर्क में शामिल होने से, सीबीआई अकादमी को न केवल वैश्विक मान्यता प्राप्त होती है। इसे ज्ञान के आदान-प्रदान से अत्यधिक लाभ होगा, जो इसके प्रशिक्षण कार्यक्रमों को हमेशा समृद्ध करेगा, जिससे वे अधिक व्यापक और विश्व स्तर पर प्रासंगिक बनेंगे।

अमेज़ॅन सहयोग संधि संगठन

14 वर्षों के अंतराल के बाद, दक्षिण अमेरिकी राष्ट्र के नेताओं ने अमेज़ॅन सहयोग संधि संगठन शिखर सम्मेलन के दौरान अमेज़ॅन वर्षावन की सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए बैठक की। यह निर्णायक सभा ब्राजील के शहर बेलेम में हो रही है जो स्थिति की तात्कालिकता का प्रमाण है।

अमेज़ॅन सहयोग संधि संगठन: समय की कसौटी पर खरा उतरना

45 साल पहले स्थापित, अमेज़ॅन सहयोग संधि संगठन (एसीटीओ) राष्ट्रों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अमेज़ॅन बेसिन के भीतर सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित एक वैश्विक इकाई के रूप में कार्य करता है। इस संगठन में शामिल राष्ट्र बोलीविया, ब्राज़ील, कोलंबिया, इक्वाडोर, गुयाना, पेरू, सूरीनाम और वेनेज़ुएला हैं।

इस सहयोग की नींव 3 जुलाई, 1978 को अमेज़ॅन सहयोग संधि (एसीटी) पर हस्ताक्षर के साथ रखी गई थी, जिसमें 1998 में संशोधन हुए। संधि के कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए, 1995 में एसीटीओ का उद्घाटन किया गया। अपनी उपस्थिति को और मजबूत करते हुए, इसका स्थायी सचिवालय 2002 में ब्रासीलिया में स्थापित किया गया था।

अमेज़न में चुनौतियाँ और विजय

अमेज़ॅन भारत के क्षेत्रफल से दोगुना क्षेत्र में फैला है, जिसमें ब्राजील इसका दो-तिहाई हिस्सा शामिल है। शेष एक तिहाई सात देशों और एक क्षेत्र में विभाजित है: कोलंबिया, पेरू, वेनेजुएला, बोलीविया, गुयाना, सूरीनाम, इक्वाडोर और फ्रेंच गुयाना।

अमेज़न जंगल का 17 प्रतिशत हिस्सा पहले ही काटा जा चुका है। हालाँकि, इसका विशाल विस्तार अभी भी पृथ्वी की जैव विविधता का 10 प्रतिशत रखता है, जो इसके अद्वितीय पारिस्थितिक महत्व पर बल देता है।

विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि यदि वनों की कटाई 20% से 25% के बीच पहुंच जाती है, तो अमेज़ॅन के जंगल अनियंत्रित रूप से भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ सकते हैं, जो एक गंभीर पर्यावरणीय खतरा है। लेकिन, उज्जवल पक्ष में,

सामूहिक प्रयासों का फल मिला है। लैटिन अमेरिकी देशों द्वारा समर्थित 2018 का एस्काज़ू समझौता, पर्यावरण डेटा पर जनता के अधिकार का समर्थन करता है और पर्यावरण के प्रति जागरूक निर्णय लेने में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करता है ।

रिकार्ड तोड़ तापमान

वैश्विक जलवायु परिवर्तन चिंताजनक रहे हैं, यूरोपीय संघ की जलवायु वेधशाला ने पुष्टि की है कि जुलाई पृथ्वी पर अब तक का सबसे गर्म महीना दर्ज किया गया है। इस तरह के रिकॉर्ड हमारे ग्रह की रक्षा के लिए आवश्यक कार्यों की तात्कालिकता को उजागर करते हैं।

पीछे और आगे देखना

ACTO देशों के क्षेत्रीय सहयोग की गति समय के साथ बढ़ रही है। आखिरी शिखर सम्मेलन जिसमें ये आठ देश एक साथ आए थे, वह 14 साल पहले हुआ था, जो इस उद्देश्य के प्रति पुनर्जीवित और शायद अधिक जरूरी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता था।

इसके अलावा, वैश्विक समुदाय की निगाहें 2025 में एक बार फिर बेलेम पर होंगी, क्योंकि यह शहर संयुक्त राष्ट्र जलवायु वार्ता की मेजबानी करने के लिए तैयार है। क्षेत्र में इस तरह की महत्वपूर्ण सभाएँ वैश्विक जलवायु चर्चाओं में इसकी केंद्रीय भूमिका को उजागर करती हैं।

श्रीलंका विशिष्ट डिजिटल पहचान परियोजना (एसएल-यूडीआई)

डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति में, भारत ने श्रीलंका की अभिनव डिजिटल पहचान परियोजना के लिए वित्तीय हाथ बढ़ाया है। श्रीलंका विशिष्ट डिजिटल पहचान परियोजना (एसएल-यूडीआई) के रूप में जानी जाने वाली यह पहल देश के तकनीकी परिदृश्य को बदलने के लिए तैयार है।

एसएल-यूडीआई परियोजना को भारत सरकार से अग्रिम रूप से ₹450 मिलियन का वित्तीय निवेश प्राप्त हुआ। यह महत्वपूर्ण योगदान परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए आवश्यक कुल धनराशि का 15% है। यह फंडिंग इस महत्वपूर्ण पहल को बढ़ावा देने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है और दोनों देशों के बीच सहयोगात्मक साझेदारी की गहराई को उजागर करती है।

एसएल-यूडीआई का सार

एसएल-यूडीआई परियोजना का लक्ष्य श्रीलंका में डिजिटल पहचान प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना है। इसमें जीवनी और बायोमेट्रिक डेटा एकत्र करना शामिल है, जिसमें चेहरे, आईरिस और फिंगरप्रिंट की जानकारी शामिल है। यह डेटा अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (आईसीएओ) द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप एक केंद्रीकृत प्रणाली के भीतर

संग्रहीत किया जाएगा। परिणामी पहचान पत्र प्रभावी सरकारी सेवा वितरण, गरीबी में कमी, कल्याण कार्यक्रम और उन्नत वित्तीय समावेशन की सुविधा प्रदान करेंगे।

द्विपक्षीय सहयोग और निगरानी

की शुरुआत मार्च 2022 में श्रीलंका और भारत के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) द्वारा चिह्नित की गई थी। इसके अलावा, भारत-श्रीलंका संयुक्त परियोजना निगरानी समिति (जेपीएमसी) के रूप में जानी जाने वाली एक सहयोगी निगरानी समिति की स्थापना की गई थी। परियोजना की प्रगति का पर्यवेक्षण करें। अपनी तकनीकी दक्षता के साथ , एसएल-यूडीआई के लिए सॉफ्टवेयर विकास में अग्रणी भूमिका निभा रहा है, जिससे परियोजना की तकनीकी अखंडता और सफलता सुनिश्चित हो रही है।

डिजिटल रूप से सशक्त श्रीलंका की ओर

एसएल-यूडीआई परियोजना नागरिकों के लाभ के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकियों की क्षमता का दोहन करने के लिए दोनों देशों की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। जैसे-जैसे परियोजना आगे बढ़ती है, यह पहचान सत्यापन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने, सरकारी सेवाओं तक बेहतर पहुंच की सुविधा प्रदान करने और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने का वादा करती है। भारत की वित्तीय सहायता और तकनीकी विशेषज्ञता के साथ, श्रीलंका का डिजिटल भविष्य उल्लेखनीय प्रगति के लिए तैयार है।

राजौरी चिकरी वुडक्राफ्ट और मुश्कबुदजी चावल को जीआई टैग प्राप्त हुआ:

एक जश्न मनाने वाले कदम में, जम्मू और कश्मीर के विशिष्ट क्षेत्रीय योगदान, राजौरी चिकरी वुडक्राफ्ट और मुश्कबुदजी चावल को हाल ही में भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग से सम्मानित किया गया है। यह प्रतिष्ठित विशिष्टता इन क्षेत्रीय खजानों की उत्कृष्ट प्रकृति और महत्व की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

राजौरी और अनंतनाग जिलों में पाई जाती हैं । जबकि राजौरी जिला अपनी सूक्ष्म चिकरी लकड़ी की कारीगरी के लिए प्रसिद्ध है , अनंतनाग अपने सुगंधित मुश्कबुदजी चावल के लिए जाना जाता है , जो अपने छोटे, मोटे दानों की विशेषता है।

सहयोगात्मक प्रयास

इस मान्यता की यात्रा दिसंबर 2020 में शुरू हुई। एक संयुक्त पहल में, नाबार्ड, हस्तशिल्प और हथकरघा विभाग ने कृषि विभाग के साथ मिलकर इन क्षेत्रीय रत्नों को वैश्विक मानचित्र पर उनका उचित स्थान दिलाने के मिशन पर काम शुरू किया।

रचनाओं की विविध विशेषताएं

इन चमत्कारों की गहराई में उतरते हुए, मुश्कबुदजी चावल न केवल पाक कला का आनंद है, बल्कि इस क्षेत्र की कृषि संबंधी प्रतिभा का एक प्रमाण है। बडगाम और कुलगाम जैसे जिलों में इसकी खेती का विस्तार इसके बढ़ते महत्व का प्रमाण है।

समानांतर रूप से , चिकरी की लकड़ी, जो अपने बारीक दानों के लिए जानी जाती है, जम्मू प्रांत की सुरम्य पहाड़ी श्रृंखलाओं के बीच अपना घर पाती है, जो इस क्षेत्र की समृद्ध कारीगर विरासत को प्रतिबिंबित करती है।

जीआई टैग का महत्व

प्रामाणिकता के बैज से अधिक, भौगोलिक संकेत टैग एक बौद्धिक संपदा अधिकार के रूप में कार्य करता है। यह न केवल क्षेत्रीय विशिष्टताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करता है, बल्कि उनकी अद्वितीय प्रकृति को भी रेखांकित करता है, जो उसी मिट्टी और संस्कृति में गहराई से निहित है, जहां से वे निकलते हैं।

सफलता की कहानी यहीं ख़त्म नहीं होती. जम्मू और कश्मीर की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और बढ़ावा देने की अटूट प्रतिबद्धता के साथ, जम्मू और कश्मीर कृषि उत्पादन विभाग अतिरिक्त 24 फसलों और उत्पादों को प्रतिष्ठित जीआई टैग से सम्मानित करने के लिए सक्रिय रूप से प्रयास कर रहा है। जैसे-जैसे कथा सामने आती है, यह विरासतों, परंपराओं और बेजोड़ क्षेत्रीय प्रतिभा की जीवंत टेपेस्ट्री का वादा करती है।